

# डॉ. डेव मैथ्यूसन, न्यू टेस्टामेंट लिटरेचर, व्याख्यान 38, रहस्योद्घाटन पर पूर्व शाप, सत्र 3

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन रहस्योद्घाटन की पुस्तक पर अपनी तीसरी और अंतिम प्रस्तुति दे रहे हैं।

हम प्रकाशितवाक्य के कई प्रमुख खंडों को केवल यह दर्शाने के लिए देख रहे हैं कि हम कैसे पढ़ते हैं और उस पृष्ठभूमि के प्रकाश में जिसे रहस्योद्घाटन संबोधित कर रहा था।

और मैं कक्षा के इस अंतिम खंड में कुछ अन्य अनुभागों को देखने के लिए आगे बढ़ना चाहता हूँ। और वह यह है कि मैं कुछ अध्यायों का बैकअप लेना चाहता हूँ और अध्याय 11 को देखना चाहता हूँ। अध्याय 11 दो गवाहों की एक और कहानी है।

और यह कहानी है कि कैसे ये दोनों गवाह एक निश्चित अवधि तक भविष्यवाणी करते हैं। कुछ समय के लिए उनकी गवाही सफल होती दिखाई देती है, लेकिन अंततः वही अजगर या जानवर, वही जानवर जिसके बारे में हम प्रकाशितवाक्य 12 और 13 में पढ़ते हैं, अध्याय 11 में एक अथाह गड्डे से निकलता है। फिर, अथाह गड्डा किसी भौगोलिक स्थिति का संदर्भ नहीं है।

यह बुराई का प्रतीक था, राक्षसी दुष्ट प्राणियों की उत्पत्ति थी। तो, यह जानवर के बाहर आने के लिए एक उपयुक्त स्थान है, जैसा कि हमने कहा, जानवर संभवतः रोमन साम्राज्य का प्रतिनिधित्व करता है। यदि आप पहली सदी के ईसाई हैं और प्रकाशितवाक्य 12 और 13 और अब अध्याय 11 पढ़ रहे हैं, और आप इस सात सिर वाले जानवर के बारे में पढ़ते हैं, तो आप शायद इसे रोमन साम्राज्य के रूप में पहचानेंगे।

हमने देखा कि अध्याय 12 और 13 रोम के साथ संघर्ष की वास्तविक प्रकृति को समझाने के लिए हैं। जानवर रोम और रोमन सम्राट का प्रतिनिधित्व करता है, और जो लोग रोम और सम्राट की पूजा की पूरी प्रणाली को बढ़ावा देते हैं। और अध्याय 12 और 13 वास्तविक स्वरूप की व्याख्या करते हैं, उसके पीछे क्या छिपा है।

अब अध्याय 11, वही जानवर रसातल से निकलता है। फिर से, जानवर संभवतः रोम और भगवान के लोगों पर अत्याचार करने और उन्हें दबाने और उनके राज्य का विरोध करने के प्रयास का प्रतिनिधित्व करता है। अब वह पशु आता है और इन दो गवाहों, इन दो व्यक्तियों को मार डालता है।

लेकिन बाद में, कुछ समय के बाद, इन दोनों गवाहों को उठाया जाता है और यह दिखाने के लिए सही साबित किया जाता है कि उनकी गवाही वास्तव में वास्तविक और सच्ची थी। अब फिर सवाल यह है कि हम कहानी से क्या मतलब निकालते हैं? सबसे पहले, पृष्ठभूमि। ये दोनों गवाह कौन हैं, इस पर कई सुझाव आए हैं।

उन्हें पढ़ना और यह महसूस करना मुश्किल नहीं है कि वे दोनों पुराने नियम के मूसा और एलिजा पर आधारित हैं। वे जिन विपत्तियों को बुलाते हैं, उनका मतलब यह है कि वे आसमान को बंद कर सकते हैं ताकि बारिश न हो। स्पष्ट रूप से, ये दोनों व्यक्ति पुराने नियम के उन दो आंकड़ों को याद करते हैं।

उनमें से दो क्यों? सबसे अधिक संभावना है क्योंकि यह तथ्य कि दो गवाह हैं, सबसे अधिक संभावना पुराने नियम की उस शर्त की याद दिलाती है कि पुराने नियम में अदालत में गवाही देने के लिए दो या तीन गवाहों की आवश्यकता होती है। शायद इसीलिए आपके पास प्रकाशितवाक्य अध्याय 11 में दो गवाह हैं, जो पुराने नियम के सिद्धांत पर आधारित है कि एक गवाही की वैधता के लिए दो या तीन गवाहों की आवश्यकता होती है। अब सवाल ये है कि ये दोनों शख्स कौन हैं और क्या कर रहे हैं? क्या ये दो वास्तविक व्यक्तियों की बात कर रहे हैं? क्या वास्तव में मूसा और एलिव्याह को भविष्य में किसी समय, अंततः, पुनर्जीवित किया गया था? कुछ लोगों ने इनका सुझाव और पहचान पॉल या जॉन या कुछ अन्य व्यक्तियों या पीटर के रूप में की है जिन्होंने पहली शताब्दी में प्रचार किया था।

लेकिन एक बार फिर, जब हम यह पहचानते हैं कि ये व्यक्ति अपने प्रतीकात्मक मूल्य के लिए महत्वपूर्ण हैं, तो संभवतः ये दोनों व्यक्ति पहली शताब्दी या भविष्य में दो वास्तविक या शाब्दिक व्यक्तियों का बिल्कुल भी उल्लेख नहीं कर रहे हैं। संभवतः ये दो व्यक्ति संपूर्ण चर्च के प्रतीक हैं। तो, एक बार फिर, अध्याय 11 मुख्य रूप से एक कहानी या विवरण है कि चर्च को इस संघर्ष के बीच भी क्या करना है।

संघर्ष और यहां तक कि उत्पीड़न के बीच में, जिसके बारे में हम अध्याय 12 और 13 में पढ़ते हैं, चर्च को क्या करना चाहिए? इसकी प्राथमिक भूमिका क्या है? खैर, अध्याय 11 कहता है कि इसकी प्राथमिक भूमिका पीड़ा के बावजूद भी गवाही देना है। चर्च को यीशु मसीह के लिए एक गवाह और गवाही बनना है, भले ही इसका मतलब यह है कि, विशेष रूप से पहली सदी के रोम के संदर्भ में, भले ही इसका मतलब है कि भगवान के लोग और चर्च पीड़ित हो सकते हैं। लेकिन अध्याय 11 हमें यह भी स्पष्ट रूप से याद दिलाता है, कि इसके बीच में भी, चर्च पूरी तरह से नष्ट नहीं होगा।

भगवान अपने चर्च को मौत का झटका नहीं लगने देंगे। इसे पूरी तरह खत्म नहीं किया जाएगा। यद्यपि इसे उत्पीड़न सहना पड़ सकता है, फिर भी परमेश्वर इसकी रक्षा करेगा।

अध्याय 11 की शुरुआत में ध्यान दें, कि जॉन चर्च को एक मंदिर के रूप में वर्णित करता है जो वास्तव में अध्याय 11 के पहले दो छंदों में मापा जाता है। और मुझे विश्वास है कि मंदिर, फिर से, एक शाब्दिक मंदिर का जिक्र नहीं कर रहा है, बल्कि प्रतीक है चर्च को भगवान के लोगों के रूप में। ठीक वैसे ही जैसे पॉल ने चर्च, स्वयं लोगों का वर्णन करने के लिए मंदिर की कल्पना का उपयोग किया था।

यूहन्ना कहता है, कि मुझे लाठी के समान मापने की छड़ी दी गई, और मुझ से कहा गया, आकर परमेश्वर के मन्दिर, और वेदी, और जो वहां भजन करते हैं, उन्हें नाप ले। मंदिर और वेदी और

पूजा करने वाले लोगों की वह पूरी तस्वीर भगवान के लोगों, चर्च का प्रतीक है। परन्तु बाहरी आँगन, मन्दिर के बाहर के आँगन को मत मापो।

उसे छोड़ दो, क्योंकि वह राष्ट्रों को सौंप दिया गया है। ये दोनों तथ्य, कि मंदिर को मापा गया है, सुरक्षा का सुझाव देते हैं। अर्थात्, परमेश्वर अपने लोगों की रक्षा करेगा, भले ही उनकी गवाही के बीच में, भले ही चर्च को कष्ट सहना पड़े और यहाँ तक कि सताया भी जाए, उसी समय, परमेश्वर इसकी रक्षा करेगा और इसकी रक्षा करेगा।

और इसलिए, अंत में, ये दो गवाह इस बात का प्रतीक होंगे कि चर्च को यह दर्शाने के लिए खड़ा किया गया है कि वे सही साबित हुए हैं। अंततः, उन्हें दिखाया जाता है कि उनकी गवाही वैध और सच्ची है। तो फिर, अध्याय 11 क्या कर रहा है? रोम के हाथों पीड़ित ईसाइयों के लिए, या यहां तक कि सोच रहे थे कि क्या उन्हें समझौता करना चाहिए, रोमन साम्राज्य के साथ संघर्ष में ईसाइयों के लिए, यह उन्हें याद दिलाता है कि भगवान के लोगों के रूप में, उन्हें यीशु मसीह के वफादार गवाह बनना है, भले ही इसका मतलब यह हो कि वे ऐसा करेंगे पीड़ित।

लेकिन अंततः वे निर्दोष साबित होंगे। रोम के पास अंतिम शब्द नहीं होगा। इस दुनिया के साम्राज्यों का अंतिम निर्णय नहीं होगा।

लेकिन ईश्वर एक दिन अपने लोगों को यह दिखाने के लिए न्यायसंगत ठहराएगा कि संघर्ष और पीड़ा इसके लायक थी, और यह कि उनकी पीड़ा वास्तव में सही और सच्ची थी। तो फिर, अध्याय 11 को प्रतीकात्मक रूप से समझा जाना चाहिए। प्रतीकात्मक रूप से, दो व्यक्ति प्रतीक हैं, दो विशिष्ट व्यक्तियों को संदर्भित नहीं करते हैं, बल्कि स्वयं चर्च का प्रतीक हैं।

और पूरा अध्याय चर्च की भूमिका के बारे में कुछ कहता है क्योंकि वे पहली शताब्दी के रोम के संदर्भ में अपने जीवन को जीने का प्रयास करते हैं। चर्च को क्या करना है? क्या रोम के प्रति निष्ठा के लिए यीशु मसीह में विश्वास से समझौता करना उचित है? या क्या यह विरोध करने लायक है? अध्याय 11 इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर दो व्यक्तियों की इस प्रतीकात्मक दृष्टि से देता है जो भविष्यवाणी करते हैं और गवाही देते हैं, फिर भी वे जो करते हैं उसके लिए पीड़ित भी होते हैं, लेकिन अंत में सही साबित होते हैं। देखने के लिए दो और अंश।

उनमें से एक शायद वह मार्ग है जिसे अक्सर पहचाना जाता है, या रहस्योद्घाटन को अधिकांश समय पहचाना जाता है। और वह प्रकाशितवाक्य 20 है और सहस्राब्दी या हजार साल के शासनकाल का संदर्भ है। फिर, वास्तव में अध्याय 20 में सहस्राब्दी के संदर्भ को समझने के कई अलग-अलग तरीके हैं।

मैं मूल रूप से उन पर गौर करना चाहता हूं और फिर मुख्य रूप से इस बात पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूं कि अनुभाग का कार्य क्या है। फिर, क्या जॉन केवल भविष्य में होने वाली घटनाओं के अनुक्रम की भविष्यवाणी करने में रुचि रखता है? या क्या यह उन पाठकों के लिए कुछ और कह रहा है जो शत्रुतापूर्ण बुतपरस्त माहौल के संदर्भ में अपना जीवन जीने का प्रयास कर रहे हैं? लेकिन ऐतिहासिक रूप से, प्रकाशितवाक्य अध्याय 20 को तीन अलग-अलग तरीकों

से समझा गया है। और फिर, इन विभिन्न तरीकों के भीतर विभिन्न प्रकार के दृष्टिकोण हैं, ठीक उसी तरह जब हमने रहस्योद्घाटन, भूतपूर्व, भविष्यवादी, आदर्शवादी की व्याख्या करने के विभिन्न तरीकों को देखा, तो हमने कहा कि इसके भीतर कुछ विविधता है।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के प्रति इन दृष्टिकोणों के साथ भी यही सच है। मुझे खेद है, प्रकाशितवाक्य 20 में सहस्राब्दी के दृष्टिकोण, या हजार वर्षों, सहस्राब्दी का संदर्भ। और इससे पहले कि हम इसके बारे में बात करें, मुझे पाठ पढ़ने दीजिए।

यह बहुत छोटा है. अध्याय 19 में, यीशु मसीह एक घोड़े पर एक योद्धा के रूप में लौटते हैं जहां वह पूरी पृथ्वी का न्याय करते हैं। और फिर अध्याय 20 में, हम इसे पढ़ते हैं।

उन घटनाओं के बाद, फिर मैंने एक स्वर्गदूत को स्वर्ग से नीचे आते देखा, जिसके हाथ में अथाह गड्ढे की चाबी थी। वह अथाह गड्ढा या रसातल है, कोई भौतिक स्थान या स्थान नहीं, बल्कि बुराई और अराजकता और शैतानी का प्रतीक है, जो ईश्वर का विरोध करता है। स्वर्गदूत फिर अजगर, उस प्राचीन साँप को देखता है, जो शैतान और शैतान है, और उसने उसे एक हजार साल के लिए बाँध दिया है।

इसमें एक हजार साल का जिक्र है. उस ने उसे गड़हे में फेंक दिया, और उस पर ताला लगा दिया, और उस पर मुहर कर दी, कि वह हजार वर्ष के अन्त तक जाति जाति को फिर न धोखा दे। इसके बाद उसे थोड़ी देर के लिए बाहर छोड़ दिया जाएगा.

फिर मैं ने सिंहासन देखे, और उन पर बैठनेवालोंको न्याय करने का अधिकार दिया गया। मैंने उन लोगों की आत्माओं को भी देखा जिनका यीशु मसीह के प्रति गवाही, परमेश्वर के वचन के कारण सिर काट दिया गया था। उन्होंने जानवर की पूजा नहीं की, अध्याय 12 और 13 और अध्याय 11 से, उन्होंने जानवर या उसकी छवि की पूजा नहीं की और अपने माथे या हाथों पर उसका निशान नहीं पाया।

वे जीवित हो गये और एक हजार वर्ष तक मसीह के साथ राज्य करते रहे। जब तक हजार वर्ष पूरे नहीं हुए तब तक शेष मृतक जीवित नहीं हुए। यह प्रथम पुनर्जीवन है।

धन्य और पवित्र वे हैं जो इस पहले पुनरुत्थान में भाग लेते हैं। उन पर दूसरी मृत्यु का कोई अधिकार नहीं, परन्तु वे परमेश्वर और मसीह के याजक होंगे, और उसके साथ एक हजार वर्ष तक राज्य करेंगे। अब, उस अस्थायी वाक्यांश की पुनरावृत्ति पर ध्यान दें, एक हजार वर्ष।

बहस यह है कि ऐसा कब होता है? यह मसीह के आगमन के संबंध में कब घटित होता है? क्या ये हजार साल फिर से मसीह के आगमन का वर्णन करते हैं जो अभी तक नहीं हुआ है? थिस्सलुनिकियों में याद रखें, हमने ईसा मसीह के दूसरे आगमन के बारे में बात की थी, जब वह इतिहास को चरमोत्कर्ष पर लाने, न्याय करने और बचाने के लिए आएंगे। सवाल यह है कि ईसा मसीह के आगमन, दूसरे आगमन के संबंध में यह हजार साल की अवधि कब घटित होती है? क्या यह इसके पहले, इसके बाद, इसके अलावा कभी घटित होता है? हम इसे कहां ढूँढते हैं? और यही वह जगह है जहां विभिन्न स्थितियां, जिन्हें हम आपके नोट्स में, पूर्व-सहस्राब्दी, उत्तर-

सहस्राब्दी, सभी-सहस्राब्दी कहते हैं, घटित होती हैं। मुझे वास्तव में उन स्थितियों के बारे में अधिक विस्तार में जाने में कोई दिलचस्पी नहीं है, लेकिन मुझे उनके बारे में संक्षेप में कुछ कहने दीजिए।

और सिर्फ इसलिए कि चर्च के पूरे इतिहास में, यह कुछ व्यक्तियों के बीच रुचि और एक मुद्दा रहा है। और फिर मैं इस बारे में एक प्रस्ताव रखूंगा कि मैं इस अनुभाग को कैसे समझता हूँ। सबसे पहले, पूर्व-सहस्राब्दी स्थिति।

मूल रूप से, पूर्व-सहस्राब्दी स्थिति कहती है, यीशु मसीह वापस आता है, दूसरा आगमन होता है, और सहस्राब्दी से पहले, इसलिए पूर्व-सहस्राब्दीवाद। अर्थात्, यीशु मसीह सहस्राब्दी से पहले लौटते हैं। वह लौटता है, और फिर वह स्वयं इस सहस्राब्दी, 1,000 वर्षों की अवधि का उद्घाटन और स्थापना करता है।

अब, इसे समझने के दो अलग-अलग तरीके हैं। कुछ लोग इसे शाब्दिक रूप से समझते हैं, और वे इसे 1,000 सटीक वर्षों की एक विशिष्ट शाब्दिक अवधि के रूप में देखते हैं। इस समय के दौरान, वे अक्सर विस्तृत परिदृश्यों का निर्माण करते हैं, यह तब होगा जब भगवान इज़राइल से अपने सभी वादे निभाएंगे और उन्हें भूमि पर बहाल करेंगे, और यहीं पर यीशु पृथ्वी पर उतरेंगे, और डेविड के पुत्र के रूप में, इज़राइल और सृष्टि पर शासन करेंगे। , और इस्राएल राष्ट्र से किए गए सभी वादे अब पूरे होंगे।

पूर्व-सहस्राब्दीवाद के अंतर्गत यह एक संभावित दृष्टिकोण है। दूसरा इतना विस्तृत नहीं है। वे बस यही कहते हैं कि, मूल रूप से, 1,000 वर्ष उस समय के बीच एक संक्रमण काल है जब बुराई हावी होती है और फिर नए स्वर्ग और नई पृथ्वी का निर्माण होता है।

सहस्राब्दी एक प्रकार का मध्यवर्ती समय है, वर्तमान युग और आने वाले युग के बीच संक्रमण का समय, जहां अध्याय 21 और 22 में आपके पास नया स्वर्ग और नई पृथ्वी है। लेकिन मुद्दा यह है कि, उन दोनों विचारों के साथ, उन दोनों को पूर्व-सहस्राब्दी का लेबल दिया गया है क्योंकि सहस्राब्दि ईसा मसीह के लौटने तक घटित नहीं होती है। ईसा मसीह इतिहास के अंत में लौटते हैं, और फिर वह पृथ्वी पर अपना सहस्राब्दी साम्राज्य स्थापित करते हैं, जहां वह पुराने नियम की पूर्ति में पूरी पृथ्वी पर शासन करते हैं।

कुछ लोग कहते हैं कि यह शाब्दिक 1,000 वर्ष है, अन्य कहते हैं कि यह अधिक प्रतीकात्मक है। यह अभी भी समय की अवधि को संदर्भित करता है, लेकिन यह मुख्य रूप से प्रतीकात्मक है। दूसरे दृष्टिकोण को सहस्राब्दीतरवाद के रूप में जाना जाता है, और जैसा कि उपसर्ग पोस्ट- से पता चलता है, ईसा मसीह का आगमन सहस्राब्दी के बाद या उसके बाद होता है।

अर्थात्, सहस्राब्दी वह समयावधि है जो ईसा मसीह के इतिहास के अंत में वापस आने से पहले, उनके दूसरे आगमन से पहले होगी। मूल रूप से, उत्तर-सहस्राब्दीवाद के अनुसार, सहस्राब्दी की स्थापना सुसमाचार के प्रचार और पवित्र आत्मा के कार्य के परिणामस्वरूप की जाएगी, जिसमें यह स्वर्ण युग जहां धार्मिकता प्रबल होती है और हावी होती है, इस स्वर्ण युग का उद्घाटन

अंत में किया जाएगा सुसमाचार के प्रचार और पवित्र आत्मा के कार्य के परिणामस्वरूप इतिहास का। सहस्राब्दि नामक इस स्वर्ण युग का उद्घाटन होगा।

एक बार जब यह खत्म हो जाएगा, तब यीशु वापस आएंगे और इस अवधि, इस सहस्राब्दी के बाद पोस्ट करेंगे, और फिर वह अपना नया स्वर्ग और अपनी नई पृथ्वी स्थापित करेंगे। इसे उत्तर-सहस्राब्दीवाद के रूप में जाना जाता है। तो, सहस्राब्दी मसीह के वापस आने से पहले होती है।

चर्च, सुसमाचार के प्रचार और आत्मा के कार्य के माध्यम से, एक अर्थ में, इस तरह के स्वर्ण युग का उद्घाटन करने के लिए जिम्मेदार है जो अंततः इतिहास में आएगा, और फिर, उसके बाद, मसीह वापस आएगा, इसलिए उत्तर सहस्राब्दीवाद। यह दृष्टिकोण पहले वाले दृष्टिकोण जितना सामान्य नहीं है, न ही अगले, सहस्रवर्षीय दृष्टिकोण जितना सामान्य है। सहस्राब्दि दृष्टिकोण से पता चलता है कि, एक अर्थ में, सहस्राब्दि एक मिथ्या नाम है।

उपसर्ग am- का अर्थ है नहीं, कोई सहस्राब्दी नहीं। लेकिन, एक मायने में, यह एक मिथ्या नाम है क्योंकि जो लोग सहस्राब्दी दृष्टिकोण रखते हैं वे यह नहीं सोचते कि कोई सहस्राब्दी नहीं है। वे बस इसकी बहुत अलग तरह से व्याख्या करते हैं।

लेकिन वे कहते हैं कि ऐसी कोई भौतिक सांसारिक सहस्राब्दी नहीं है जो पृथ्वी पर किसी समय अवधि में घटित होगी। लेकिन, इसके बजाय, सहस्रवर्षीयवाद कहता है कि प्रकाशितवाक्य 20 में हम जिस हजार साल की अवधि के बारे में पढ़ते हैं, वह चर्च के इतिहास की पूरी अवधि का प्रतीक है जहां यीशु मसीह स्वर्ग से शासन करते हैं। और, पॉल के अनुसार, याद रखें, हमने पॉल में ऐसे छंद देखे हैं जो बताते हैं कि हमें मसीह के साथ स्वर्ग में बैठाया गया है।

वे कहेंगे, यह तो बस जॉन का कहने का तरीका है। वह इस हजार साल का उपयोग इस तथ्य का वर्णन करने के एक प्रतीकात्मक तरीके के रूप में करता है कि मसीह पहले से ही स्वर्ग से शासन करता है और, जैसा कि पॉल ने कहा, मसीह के साथ बैठे और पले-बढ़े होने के कारण, हम उसके साथ शासन करते हैं। तो, हजार साल का मतलब सहस्रवर्षीयवाद के अनुसार, हजार साल पृथ्वी पर समय की एक भौतिक अवधि नहीं है, बल्कि, प्रतीकात्मक रूप से, यह स्वर्ग से अभी मसीह के शासनकाल, आध्यात्मिक शासनकाल को चित्रित करता है।

उनके पहले आगमन और उनके दूसरे आगमन के बीच, वह पूरी अवधि सहस्राब्दी है क्योंकि मसीह अब स्वर्ग से शासन कर रहे हैं, और हम मसीह से संबंधित होने के कारण उनके साथ शासन करते हैं, जैसा कि पॉल ने कहा था। तो, पूरे चर्च के इतिहास में, ये सहस्राब्दी के प्रमुख विचार रहे हैं। अर्थात्, पूर्वसहस्राब्दीवाद, मसीह लौटता है और फिर पृथ्वी पर अपना सहस्राब्दी शासन स्थापित करता है।

सहस्राब्दी के बाद, चर्च न केवल अपने उपदेशों के माध्यम से, बल्कि आत्मा के कार्य के माध्यम से, सहस्राब्दी की स्थापना करता है, या सहस्राब्दी का उद्घाटन करता है। यह स्वर्ण युग, यह सहस्राब्दि, पृथ्वी पर घटित होता है। उस समय के अंत में, मसीह वापस आते हैं।

या सहस्राब्दीवाद, सहस्राब्दी ईसा मसीह की वापसी से पहले या बाद के किसी विशिष्ट समय का उल्लेख नहीं करता है। यह चर्च की पूरी उम्र को संदर्भित करता है, पहली शताब्दी से लेकर जब भी ईसा मसीह दोबारा लौटते हैं, वह पूरी अवधि सहस्राब्दी है, जिसे प्रतीकात्मक रूप से एक हजार साल के रूप में चित्रित किया गया है, जहां ईसा मसीह पहले से ही स्वर्ग से शासन कर रहे हैं, और हम उनके साथ शासन करते हैं। मसीह से संबंधित. तो, ये तीन प्राथमिक विचार हैं।

मुझे यह दिलचस्प लगता है कि सहस्राब्दी ने इतना अधिक ध्यान आकर्षित किया है क्योंकि, फिर से, जो छंद मैंने अभी पढ़े हैं, सबसे पहले, नए नियम में यह एकमात्र स्थान है जहां आपको एक हजार वर्षों का संदर्भ मिलता है। इसका मतलब यह नहीं है कि यह महत्वपूर्ण नहीं है, लेकिन इसका मतलब यह है कि यह एकमात्र स्थान है जहां आपको एक हजार साल की अवधि का संदर्भ मिलता है। लेकिन इसे गुप्त रूप से संदर्भित किया गया है।

मेरा मतलब है, ध्यान दें कि उस हजार साल की अवधि के दौरान क्या हुआ, इसके बारे में कुछ भी नहीं कहा गया है। यह विशेष रूप से यह भी नहीं बताता कि यह कहाँ घटित होता है। हम एक तरह से मान लेते हैं कि यह पृथ्वी पर घटित होता है, लेकिन प्रकाशितवाक्य 20 ऐसा नहीं कहता है।

यह सिर्फ इतना कहता है, वे जीवित हुए और मसीह के साथ एक हजार वर्ष तक राज्य करते रहे। यह नहीं बताता कि कहाँ. तो, यह स्वर्ग से हो सकता है, यह स्वर्गीय शासन हो सकता है, यह सांसारिक शासन हो सकता है।

पाठ हमें नहीं बताता. तो, मैं वास्तव में प्रकाशितवाक्य 20 की संक्षिप्त प्रकृति से प्रभावित हूँ। यानी, इसमें बहुत सारे अंतराल हैं।

यह बहुत संक्षिप्त है. यह हमें सहस्राब्दी के बारे में सब कुछ नहीं बताता। फिर, यह हमें यह नहीं बताता कि यह विशेष रूप से कहाँ होता है, क्या होता है, क्या होता है, वहां कौन है, क्या वहां संतान उत्पन्न होने वाली है, आदि, आदि।

क्या यह इसराइल के वादों को पूरा करने का समय है? रहस्योद्घाटन हमें इसके बारे में कुछ भी नहीं बताता है। अध्याय 21 और 22 की तुलना में सहस्राब्दी का संदर्भ बहुत, बहुत संक्षिप्त है, जो कि मसीह के लौटने पर क्या होता है, इसके बारे में बहुत, बहुत विस्तृत है। मेरी राय में, यदि मैं एक प्रस्ताव रख सकता हूँ, तो मेरी राय में, सहस्राब्दी, एक हजार वर्षों का संदर्भ, संभवतः समय की अवधि को संदर्भित नहीं करता है।

यह मसीह के दूसरे आगमन पर क्या होता है इसका वर्णन करने का एक प्रतीकात्मक तरीका है। यह बस परमेश्वर के लोगों की पूर्ण पुष्टि और परमेश्वर के लोगों के प्रतिफल का वर्णन करने का एक प्रतीकात्मक तरीका है। यह बस ईश्वर के संपूर्ण निर्णय और पुष्टि को दर्शाने का एक तरीका है और इसका मतलब किसी विशिष्ट अवधि का वर्णन करना नहीं है।

जैसे प्रश्न पूछने के लिए, क्या यह पृथ्वी पर है या स्वर्ग में, या क्या यहां लोग पैदा होंगे या शादी करेंगे, या क्या यह वह जगह है जहां इज़राइल अपने सभी वादे पूरे करता है? वे सभी प्रश्न जो हम

पूछना चाहते हैं, मुझे लगता है, अनावश्यक हैं क्योंकि जॉन, मुझे नहीं लगता कि जॉन किसी विशिष्ट अवधि का वर्णन करने की कोशिश कर रहा है जो कहीं घटित होता है, लेकिन फिर, यह वर्णन करने का एक और तरीका है कि जब मसीह वापस आता है तो क्या होता है . वह अपने लोगों को प्रतिफल देगा और उनका न्याय करेगा, और वह पृथ्वी का न्याय करेगा। यह स्पष्ट हो जायेगा.

अंततः, परमेश्वर के लोगों को न्यायोचित ठहराया जाएगा, और परमेश्वर का न्याय और फैसला सच्चा दिखाया जाएगा। सहस्राब्दी इसी बारे में है। इसलिए मुझे लगता है कि इसके बारे में हम जो प्रश्न पूछते हैं उनमें से कुछ शायद पाठ से परे होते हैं।

फिर से, प्रकाशितवाक्य 20 पढ़ें, और आप आश्चर्यचकित रह जाएंगे कि इसमें कितना कम कहा गया है। आपके पास बस एक हजार वर्षों का संक्षिप्त संदर्भ है, जहां बुराई को मिटा दिया जाता है, बुराई पर अंकुश लगाया जाता है, और भगवान के लोगों को सही ठहराया जाता है और पुरस्कृत किया जाता है और सही दिखाया जाता है, और भगवान का न्याय और निर्णय प्रबल होता है। मूलतः यही सहस्राब्दि का अर्थ है।

अब, जैसा कि मैंने कहा, सहस्राब्दी लगभग एक संक्षिप्त विराम बिंदु है, लगभग रहस्योद्घाटन में भव्य समापन के लिए एक तरह की राहत है, जो प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 और 22 में होता है। कुछ मामलों में, रहस्योद्घाटन, शीर्षक का उपयोग करने के लिए डिक्सेस के उपन्यास, रिवीलेशन को दो शहरों की कहानी के रूप में वर्णित किया जा सकता है। अध्याय 17 और 18 इसका वर्णन, फिर से, अत्यधिक प्रतीकात्मक भाषा में करते हैं।

जॉन एक महिला का वर्णन करता है जिसे वह एक वेश्या के रूप में चित्रित करता है जो एक जानवर पर बैठी है, और यह महिला दुनिया को लुभाने में सक्षम है और काफी आकर्षक है, लेकिन फिर भी एक भयानक जानवर की सवारी करती है, जिसे हम पहले से ही राक्षसी प्रकृति, शैतानी और दुष्ट के रूप में पहचान चुके हैं। प्रकृति में। फिर, जॉन जो वर्णन कर रहा है, पहली सदी के किसी भी पाठक ने पढ़ा होगा और पहचाना होगा कि जानवर पर सवार यह महिला रोमन साम्राज्य से कम नहीं है। इसे सात पहाड़ियों पर विराजमान बताया गया है।

यह पहली शताब्दी में रोम शहर का एक सामान्य चित्रण था। इसलिए, मैं कल्पना नहीं कर सकता कि पहली सदी का कोई पाठक प्रकाशितवाक्य 17 को पढ़ रहा हो, यह महिला एक जानवर पर सवार हो, और रोमन साम्राज्य और रोमन सम्राट के बारे में न सोच रही हो। लेकिन अध्याय 18 में वह नष्ट हो जाती है।

रोम उसके अहंकार, उसके दिखावे और इस तथ्य के कारण नष्ट हो गया कि उसने खुद को ईश्वर के ऊपर स्थापित कर लिया क्योंकि उसकी संपत्ति दूसरों की कीमत पर और ईसाइयों के जीवन की कीमत पर आई है। उसके कारण, जैसे परमेश्वर ने अतीत में दुष्ट, दुष्ट राष्ट्रों और साम्राज्यों का न्याय किया है, वैसे ही वह एक बार फिर रोम का न्याय करेगा, और वास्तव में उसने किया। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक लिखे जाने के कुछ समय बाद ही रोम नष्ट हो गया था।



तो, उस संबंध में इसकी भविष्यवाणी सच हुई। लेकिन, रोम को नष्ट होते हुए और शून्य में परिवर्तित होते हुए चित्रित किया गया है। और उस खंड के बीच में, अध्याय 18, श्लोक 4 में, जॉन के पाठकों, ईसाइयों को उससे बाहर आने के लिए कहा जाता है, ताकि वे उसके फैसले में भाग न लें, ताकि वे अलग हो जाएं।

रोम नष्ट होने वाला है. उसके साथ समझौता मत करो. रोमन शासन और विचारधारा के आगे न झुकें।

सम्राट पूजा में भाग न लें. लेकिन उससे बाहर आओ. उससे अलग हो जाओ.

लेकिन, यदि परमेश्वर के लोगों को रोम से बाहर आना है और अलग होना है, तो उन्हें कहीं न कहीं जाना होगा। और इसका उत्तर अध्याय 21 और 22 में मिलता है। यदि वे रोमन शासन से अलग हो जाएंगे और इस अहंकारी, दिखावटी, भ्रष्ट विचारधारा और प्रणाली और राक्षसी प्रणाली के आगे नहीं झुकेंगे, यदि वे इससे इनकार करेंगे और इसका विरोध करेंगे।, फिर जॉन कहता है, आपके पास जाने के लिए जगह है।

और वह प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 और 22 में नया यरूशलेम है। फिर, नए यरूशलेम के इस दर्शन के बारे में मैं तीन बातें कहना चाहता हूँ। सबसे पहले, पृष्ठभूमि यह है कि प्रकाशितवाक्य 21 और 22 की लगभग हर कविता, कम से कम पहले पांच छंद, पुराने नियम में निहित हैं।

वास्तव में, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में एक टिप्पणी में कहा गया है, कि यदि आपने प्रकाशितवाक्य 21 और 22 में पुराने नियम के सभी संदर्भ हटा दिए, तो आपके पास लगभग दो या तीन छंद बचे होंगे। और यह सच्चाई से बहुत दूर नहीं है. प्रकाशितवाक्य 21 और 22 पुराने नियम की भाषा से ओत-प्रोत हैं।

वस्तुतः सब कुछ पुराने नियम में चला जाता है। नई रचना का संदर्भ, नए यरूशलेम का संदर्भ, नई वाचा, शहर की माप। जॉन यशायाह और ईजेकील और यिर्मयाह के सभी महान भविष्यवाणी साहित्य, और अन्य भविष्यवाणी ग्रंथों, और कुछ कथा ग्रंथों का भी उपयोग कर रहा है।

ऐसा लगता है मानो उसने इज़राइल से किए गए सभी वादों को एक भव्य समापन, एक भव्य दर्शन में इकट्ठा किया है ताकि यह दिखाया जा सके कि यह नया यरूशलेम, यह दर्शन, भगवान के लोगों की सभी आशाओं और अपेक्षाओं की अंतिम पूर्ति है, जैसा कि पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं में व्यक्त किया गया है। अब वह सभी भविष्यसूचक ग्रंथों और पुराने नियम के ग्रंथों से सभी पहलुओं को लेता है और उन्हें इस नए यरूशलेम की एक भव्य दृष्टि में एक साथ जोड़ता है जिसे वह रोमन शासन के विकल्प के रूप में प्रस्तुत करता है। जहां तक नए येरुशलम की पहचान का सवाल है, हमें इसे फिर से प्रतीकात्मक रूप से पढ़ने की जरूरत है।

हमें यह समझने की आवश्यकता है कि जॉन संभवतः किसी शाब्दिक भौतिक शहर का वर्णन नहीं कर रहा है, भले ही वह इसे मापता हो। इसके बजाय, जॉन, फिर से, जॉन अपनी दृष्टि में एक शहर देख रहा है, लेकिन जो महत्वपूर्ण है वह इसके प्रतीकात्मक मूल्य का प्रतीक है। मेरी राय में, प्रकाशितवाक्य 21 और 22 में शहर एक बार फिर परमेश्वर के लोगों का प्रतीक है।

जॉन मुख्य रूप से परमेश्वर के सिद्ध लोगों को अब एक नई पृथ्वी पर रहते हुए देख रहा है। तो, फिर से, हममें से कुछ ने शायद आधुनिक समय के चित्रण देखे होंगे कि नया यरूशलेम कैसा दिखने वाला है, लेकिन फिर भी, हालांकि वे दिलचस्प और आकर्षक हैं, वे शायद लक्ष्य से थोड़ा हटकर हैं, क्योंकि जॉन नहीं हैं हमें नया जेरूसलम कैसा दिखने वाला है इसका एक वास्तुशिल्प खाका दे रहा है। इसके बजाय, जॉन स्वयं लोगों का वर्णन करने में रुचि रखते हैं।

उसी तरह जैसे पॉल चर्च को एक मंदिर और एक इमारत के रूप में वर्णित कर सकता था, उदाहरण के लिए इफिसियों अध्याय 2 में, अब जॉन सिद्ध चर्च, परमेश्वर के सिद्ध लोगों, एक नए यरूशलेम, एक शहर के रूप में वर्णन करता है। फिर, यहां तक कि माप, 144 हाथ की माप, या अध्याय 21 में नए यरूशलेम के सभी माप 12 के गुणज पर आधारित हैं। और हम पहले ही देख चुके हैं कि 12 वह संख्या है जो भगवान के लोगों का प्रतीक है।

तो जॉन जो वर्णन कर रहा है वह कोई भौतिक शहर नहीं है। मुझे संदेह है कि वह जिस शहर का वर्णन करता है वह वास्तव में भगवान के संपूर्ण लोगों, अतीत, वर्तमान और भविष्य को भी आश्रय दे सकता है। लेकिन इसके बजाय, जॉन जो वर्णन कर रहा है वह नई सृष्टि में परमेश्वर के परिपूर्ण, परिपूर्ण लोगों का है।

फिर से, ध्यान दें कि नए यरूशलेम में 12 द्वार हैं जो इज़राइल की 12 जनजातियों से पहचाने जाते हैं, और यह 12 नींवों पर बनाया गया है, जिनकी पहचान 12 प्रेरितों से की जाती है। फिर, यहां तक कि इमारत के पत्थर और शहर की स्थापत्य विशेषताएं पुराने नियम के इज़राइल और चर्च दोनों के भगवान के लोगों का प्रतीक हैं, जो अब भगवान के एक सिद्ध, परिपूर्ण लोगों में एक साथ लाए गए हैं। तो, फिर से, जॉन इस सभी पुराने नियम की कल्पना को खींचता है और इसे इस चरम दृष्टि में एक साथ लाता है, जहां वह मुख्य रूप से स्वयं लोगों को संदर्भित करता है, न कि किसी भौतिक शहर को।

ऐसा नहीं है कि नई सृष्टि में कोई शहर या भौतिक शहर नहीं होंगे, लेकिन यहां जॉन का मुद्दा यह नहीं है। वह मुख्य रूप से लोगों का वर्णन कर रहा है, किसी भौतिक शहर का नहीं। वह जिस शहर को देखता है वह पुराने नियम के इज़राइल और स्वयं प्रेरितों की नींव पर बने चर्च से बने परमेश्वर के सिद्ध और परिपूर्ण लोगों का प्रतीक है।

फिर, ये सभी ग्रंथ या तो जॉन के सभी दर्शन यशायाह, ईजेकील और अन्य भविष्यसूचक साहित्य के ग्रंथों पर आधारित हैं। फिर, जॉन भविष्यवाणी परंपरा के अंत में लिख रहा है, और वह सभी वादों को एक साथ लाता है यह दिखाने के लिए कि वे मसीह में कैसे पूरे होते हैं और अंततः वे अपने चरमोत्कर्ष तक कैसे पहुंचेंगे। न्यू जेरूसलम के दृष्टिकोण के बारे में कहने लायक दूसरी बात इसके कार्य से संबंधित है।

मैं इस बारे में दो बातें कहना चाहता हूं। हम पहले ही कह चुके हैं कि न्यू जेरूसलम का दृष्टिकोण बेबीलोन के दृष्टिकोण के समकक्ष के रूप में कार्य करता है, जिसे फिर से रोम के साथ पहचाना

गया होगा। वास्तव में, रोम को अक्सर, पहली शताब्दी में इस समय, अक्सर बेबीलोन कहा जाता होगा।

1 पतरस की हमारी चर्चा याद रखें, जहाँ वह बेबीलोन का उल्लेख करता है, जो एक प्रकार से रोम का कोड नाम है। तो, अब जब रोम अपने अहंकार और दुष्टता के कारण न्याय में नष्ट होने जा रहा है, तो भगवान के लोगों को कहीं न कहीं जाना होगा। तो, जॉन अब उन्हें एक विकल्प प्रदान करता है।

यदि वे रोम छोड़ देंगे, यदि वे...शारीरिक रूप से नहीं, तो स्पष्ट रूप से आप रोम के प्रभाव से बचने के लिए पहली शताब्दी के रोमन साम्राज्य में कहीं भी नहीं जा सकते थे, लेकिन यदि वे रोम के साथ जुड़ने से इनकार करते हैं, यदि वे अपने वफादार बने रहेंगे गवाह, प्रकाशितवाक्य अध्याय 11, यदि वे रोम की भ्रष्ट विचारधारा और धन के साथ जुड़ने और उसके साथ जुड़ने से इनकार करेंगे, यदि वे सम्राट की पूजा में भाग लेने और यीशु मसीह के प्रति एकमात्र, विशेष निष्ठा बनाए रखने से इनकार करेंगे, तो उन्हें कहीं और जाना होगा। और यह एक ऐसा शहर है जो रोम द्वारा प्रदान की जा सकने वाली किसी भी चीज़ से कहीं आगे और कहीं अधिक है। और वह नई सृष्टि में परमेश्वर के लोगों के संपूर्ण समुदाय से संबंधित है।

लेकिन इस पाठ में उजागर करने के लिए कुछ और भी है, और वह यह है कि प्रकाशितवाक्य में भगवान के लोगों की अंतिम नियति दिलचस्प रूप से स्वर्ग नहीं बल्कि एक नई पृथ्वी है। और आप में से कुछ लोगों ने मुझे पहले यह कहते हुए सुना है, मैं स्वर्ग नहीं जा रहा हूँ, लेकिन मेरी अंतिम नियति एक नई पृथ्वी है। और ठीक यही वह जगह है जहाँ भगवान के लोग रहस्योद्घाटन में समाप्त होते हैं।

बादलों में तैरते किसी क्षणभंगुर आध्यात्मिक अस्तित्व का विचार बाइबिल का दर्शन नहीं है। यह मुझे अधिक ज्ञानवाद जैसा लगता है। यदि आपको याद हो, तो हमने सेमेस्टर की शुरुआत में ज्ञानवाद पर चर्चा की थी, भौतिक और आध्यात्मिक के बीच का अंतर, आध्यात्मिक ही सच्ची वास्तविकता है।

ज्ञानवाद में, मुक्ति का अर्थ पृथ्वी से भागना, पृथ्वी की भौतिक जेल और शरीर से आध्यात्मिक अस्तित्व की ओर भागना था। लेकिन यह बाइबिल की दृष्टि नहीं है। हमारे भविष्य की नियति का बाइबिल दृष्टिकोण हमें उसी स्थान पर समाप्त करता है जहाँ से हमने शुरुआत की थी, अर्थात् पृथ्वी पर।

प्रकाशितवाक्य 21 और 22 और उत्पत्ति 1 और 2 के बीच समानता पर ध्यान दें। शुरुआत में, भगवान स्वर्ग और पृथ्वी का निर्माण करते हैं। अब, जॉन एक नया स्वर्ग और एक नई पृथ्वी देखता है। और प्रकाशितवाक्य 1 से 3 में ईडन और नये यरूशलेम के बीच सभी संबंध।

तो, जो चल रहा है वह सबसे पहले से है, मानवता के लिए भगवान का इरादा यह है कि भगवान एक ऐसी रचना में उनके बीच में निवास करें जहाँ वह उनका भगवान है और वे उसके लोग होंगे। यह अब प्रकाशितवाक्य 21 और 22 में पूरी तरह से महसूस किया गया है, जहाँ भगवान अब एक नई रचना में अपने सिद्ध, परिपूर्ण लोगों के साथ रहते हैं। इसलिए पहली रचना नई रचना से

कितनी भी भिन्न हो, प्रकाशितवाक्य 21 और 22 की नई रचना और पहली रचना के बीच कितना भी असंतोष हो, फिर भी निरंतरता है।

यह अभी भी एक भौतिक पृथ्वी है. इसलिए परमेश्वर के लोगों की अंतिम नियति शरीर से बचकर बादलों में तैरना नहीं है। मैं इससे अधिक उबाऊ अस्तित्व के बारे में नहीं सोच सकता।

लेकिन परमेश्वर के लोगों की अंतिम नियति बहुत भौतिक है, भले ही पाप और मृत्यु के सभी प्रभावों से मुक्त हो, लेकिन फिर भी भौतिक है। तो यहीं पर प्रकाशितवाक्य की पुस्तक समाप्त होती है। यदि ईश्वर के लोग रोम द्वारा दी जाने वाली पेशकश या इस दुनिया के राष्ट्रों और साम्राज्यों द्वारा दी जाने वाली पेशकश को त्याग देंगे, तो उनके पास एक दुनिया, एक विकल्प है, जो उनके लिए तैयार है।

और इसलिए यहीं पर प्रकाशितवाक्य की पुस्तक समाप्त होती है। अब आप अपने नोट्स में देखेंगे कि बाइबल में सृजन और नई रचना पर एक संक्षिप्त भ्रमण है। हमारे व्याख्यानों और नोट्स में कई विषयों की तरह, और कई विषयों की तरह, यह भी पुराने नियम पर वापस जाता है।

हम पहले ही इस तथ्य के बारे में बात कर चुके हैं कि नई रचना की पृष्ठभूमि पुराने नियम में है। यह पहली सृष्टि और ईडन गार्डन तक जाता है, जहां मानवता को शासन करने के लिए भगवान के प्रतिनिधियों के रूप में बगीचे में रखा गया था। यह भूमि उन्हें उपहार स्वरूप दी गई थी।

तो, भगवान के लोगों को पृथ्वी पर भगवान की उपस्थिति का आनंद लेने के लिए बनाया गया था, मानव अस्तित्व के लिए उपयुक्त वातावरण में, लेकिन जहां भगवान अपने लोगों के साथ रह सकते हैं। अब स्पष्ट रूप से जैसा कि कहानी में कहा गया है, पाप के कारण विफल हो गया है और मानवता को पृथ्वी से निष्कासित कर दिया गया है, लेकिन भूमि या सृजन का विषय इब्राहीम को दी गई भूमि के वादे के साथ जारी है। उत्पत्ति अध्याय 12 को याद रखें, परमेश्वर ने इब्राहीम से जो वाचा बाँधी थी, मैं तुम्हें आशीष दूँगा, मैं तुम्हें आशीष दूँगा, मैं तुम्हें पृथ्वी की सारी जातियों के लिए आशीष बनाऊँगा।

लेकिन आशीर्वाद का एक हिस्सा, या वाचा का एक हिस्सा यह था कि भगवान उसे उस भूमि पर लाएगा जो वह उसे दिखाएगा। दरअसल, भगवान ने उसे जमीन इसलिए नहीं दी क्योंकि उसे रहने के लिए जगह की जरूरत है, क्योंकि यह उत्पत्ति 1 और 2 की पूर्ति का हिस्सा है, कि भगवान लोगों को जमीन देगा। भूमि आशीर्वाद का स्थान थी।

भूमि, पृथ्वी एक जगह थी, एक ऐसी जगह बनने का इरादा था जहां भगवान अपने लोगों को आशीर्वाद देंगे और उनके साथ रहेंगे। इसलिए, इब्राहीम को भूमि देकर, इस्राएल को भूमि पर लाकर, यह परमेश्वर के अपने सृजन पर, भूमि में, ईडन के बगीचे में अपने लोगों के साथ रहने के इरादे की पूर्ति का प्रारंभिक चरण था, जो बाधित हो गया था और पाप के कारण असफल हो गये। लेकिन इज़राइल भी विफल रहा, क्योंकि इज़राइल विफल रहा और उसकी अवज्ञा की, इज़राइल को भी, आदम और हव्वा की तरह, भूमि से निष्कासित कर दिया गया, और इज़राइल ने कोई बेहतर प्रदर्शन नहीं किया।

उन्होंने भी पाप किया और उन्हें उस भूमि, आशीर्वाद के स्थान, जहां भगवान अपने लोगों के साथ निवास करेंगे, से निष्कासित कर दिया गया। इसलिए, आप भविष्यवक्ताओं में यह अपेक्षा पाते हैं कि एक दिन ईश्वर इस्राएल को उसकी भूमि पर वापस लौटाएगा, क्योंकि फिर से, यह इब्राहीम से किए गए वादे का हिस्सा है, यह उत्पत्ति 1 और 2 में मानवता के लिए उनके इरादे का हिस्सा है, उन्हें भूमि देना, आशीर्वाद का स्थान, जहां भगवान उनके साथ निवास करेंगे। इसलिए, हम पाते हैं कि जब इज़राइल को भूमि से निष्कासित कर दिया गया और निर्वासन में ले जाया गया, तो अपने पुराने नियम के इतिहास को याद रखें, भविष्यवक्ता एक उम्मीद प्रदर्शित करते हैं कि भगवान इज़राइल को भूमि पर वापस लाएंगे।

लेकिन कुछ भविष्यसूचक ग्रंथों में, यह अपेक्षा इज़रायल को फ़िलिस्तीन की भौतिक भूमि पर वापस लाने से कुछ आगे बढ़ने लगी है। वास्तव में, यशायाह अध्याय 65 में, इन भविष्यवाणी ग्रंथों में से एक में, वास्तव में, एक भविष्यवाणी पाठ जिसका उल्लेख स्वयं जॉन ने किया है, हम देखना शुरू करते हैं कि भूमि पर इज़राइल की वापसी एक तरह से विस्तारित होने लगती है और अधिक भविष्यवाणियां करने लगती है या एक प्रकार का सर्वनाशकारी या यहाँ तक कि लौकिक अनुपात भी। तो, यहाँ भविष्यवक्ता यशायाह क्या कहते हैं।

फिर, वह ऐसे समय को संबोधित कर रहे हैं जब इज़राइल अपनी भूमि पर लौट आया है, लेकिन उन्हें अभी भी एक बड़ा परिवर्तन होने की उम्मीद है। वह कहता है, यह ईश्वर यशायाह के माध्यम से बोल रहा है, "क्योंकि मैं, ईश्वर, एक नया आकाश और एक नई पृथ्वी बनाने वाला हूँ। पहली बातें याद नहीं की जाएंगी या दिमाग में नहीं आएंगी।

परन्तु मैं जो कुछ मैं रच रहा हूँ उस से आनन्दित और सर्वदा मगन रहो, क्योंकि मैं यरूशलेम को आनन्दमय और उसकी प्रजा को आनन्दमय बनाने पर हूँ। मैं यरूशलेम में आनंद मनाऊंगा और अपने लोगों में आनंद मनाऊंगा।" ध्यान दें कि प्रकाशितवाक्य 21 एक नए स्वर्ग, एक नई पृथ्वी और एक नए यरूशलेम से शुरू होता है। इसलिए, जॉन मूल रूप से, प्रकाशितवाक्य 21 में प्रत्याशित है, जो प्रत्याशित है उसकी पूर्ति का चित्रण करता है। यशायाह अध्याय 65.

इसलिए, भविष्यवक्ता इस प्रत्याशा के साथ समाप्त होते हैं कि ईश्वर को अभी भी मानवता के लिए अपने इरादे को बहाल करना होगा, उन्हें एक भूमि, आशीर्वाद का स्थान, जहां ईश्वर रहेंगे और अपने लोगों के साथ निवास करेंगे। नए नियम में, नई सृष्टि का वादा दो चरणों में पूरा होता है। और यहां हम पहले से ही वापस आ गए हैं, लेकिन अभी तक दोबारा नहीं।

नई सृष्टि, भूमि का वादा, पहले से ही मौजूद है। इसका उद्घाटन ईसा मसीह में ही हो जाता है। दिलचस्प बात यह है कि 2 कुरिन्थियों अध्याय 5 में, पॉल वास्तव में यशायाह 65 की ओर संकेत करता है, जहाँ वह कहता है, यदि कोई मसीह में है, तो वह एक नई रचना है।

पुराना तो बीत गया, देखो, सब वस्तुएं नई हो गई हैं। वह भाषा यशायाह अध्याय 65 से निकलती है। इसलिए, नए नियम में जो चल रहा है वह बताता है कि मानवता के लिए एक नई रचना, आशीर्वाद की भूमि जहां भगवान उनके साथ रहेंगे, पर रहने का भगवान का इरादा पहले से ही पूरा हो चुका है। यीशु मसीह।

लेकिन निःसंदेह, इसका अभी तक कोई आयाम नहीं है। तो, अभी तक नहीं आया आयाम प्रकाशितवाक्य 21 और 22 में आता है, जहां जॉन कहते हैं, मैंने एक नए स्वर्ग और एक नई पृथ्वी को एक नए यरूशलेम के साथ देखा, जिसके बीच में भगवान के लोग थे। तो, रहस्योद्घाटन तब मुक्तिदायक इतिहास का लक्ष्य बनता है।

अर्थात्, उत्पत्ति 1 और 2 से, लोगों को उपहार के रूप में, उनके रहने के लिए, एक आशीर्वाद स्थान जहां भगवान उनके बीच में निवास करेंगे, एक पर्यावरण, एक भूमि बनाने का भगवान का इरादा अंततः जॉन की दृष्टि में पूरा हो जाता है प्रकाशितवाक्य 21 और 22 में, जहां भगवान के सभी लोग अब खुद को एक नई पृथ्वी पर पाते हैं, भगवान उनके बीच में रहते हैं, उनके साथ एक अनुबंधित रिश्ते में। तो आखिरकार, रहस्योद्घाटन का संदेश क्या है? रहस्योद्घाटन, जैसा कि हम पहले ही देख चुके हैं, युगांतशास्त्र के बारे में एक किताब से कहीं अधिक है। यद्यपि युगांतशास्त्र, जब हम युगांतशास्त्र के बारे में सोचते हैं, तो हम इतिहास के अंत से संबंधित चीजों के बारे में सोचते हैं, कि कैसे भगवान इतिहास को उसके चरमोत्कर्ष पर लाएगा और अपने महान उद्देश्यों और इरादों को पूरा करेगा।

लेकिन रहस्योद्घाटन केवल युगांत विज्ञान से कहीं अधिक है। हमने देखा है कि रहस्योद्घाटन एक ऐसी पुस्तक है जो विश्व व्यवस्था और संस्थानों के दिखावा, अहंकार और ईश्वर-विरोधीता को उजागर करती है, चाहे वह कहीं भी पाई गई हो। रहस्योद्घाटन हमारे लिए इसका विरोध करने का आह्वान है।

यह पवित्र जीवन जीने का आह्वान है। यह यीशु मसीह के प्रति विशेष आज्ञाकारिता और आराधना प्रदान करने का आह्वान है, चाहे इसके लिए कोई भी कीमत चुकानी पड़े। रहस्योद्घाटन हमारे समाज और किसी भी संस्था या व्यक्ति या साम्राज्य के सभी दिखावे और झूठे दावों का खुलासा करता है जो खुद को भगवान के ऊपर स्थापित करता है।

और यह हमसे इसका विरोध करने का आह्वान करता है। यह हमें इसके सामने अपनी भविष्यसूचक गवाही को बनाए रखने के लिए कहता है, चाहे इसके लिए हमें कुछ भी कीमत चुकानी पड़े। और अंततः, प्रकाशितवाक्य एक अनुस्मारक है कि केवल यीशु मसीह और भगवान ही हमारी पूजा के योग्य हैं।

कोई अन्य मनुष्य, कोई अन्य संस्था हमारी पूजा और निष्ठा के योग्य नहीं है। वह मूर्तिपूजा है। केवल यीशु मसीह ही हमारी आराधना के योग्य हैं।

और इस प्रकार, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक और नए नियम के माध्यम से हमारी यात्रा समाप्त होती है।

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन रहस्योद्घाटन की पुस्तक पर अपनी तीसरी और अंतिम प्रस्तुति दे रहे हैं।